RNI NO. MPHIN/2022/85285
डाक पंजी. क्र.- MP/KDW/93/2023-24
Email id: haldharkisankgn@gmail.com

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र

हलधर किसान

वर्ष 02 अंक 9 | नवंबर 2023 | पृष्ठ- 8 मूल्य- 5.00 रुपए

खेती और देशी प्रजातियों को प्रभावित कर रहे खतरनाक पौधे, 20 राज्यों में किया अध्ययन

हलधर किसान एक नए अध्ययन में खुलासा हुआ है कि भारत में प्राकृतिक आवासों को आक्रामक पौधों की प्रजातियों से भारी खतरा है। खेती और देशी प्रजातियों के लिए यह पौधे खतरनाक साबित हो रहे है। अध्ययन में कहा गया है कि, भारत में आक्रामक पौधों की प्रजातियों ने 22 प्रतिशत प्राकृतिक आवासों पर कब्जा किया है। यहां इनके 66 प्रतिशत प्राकृतिक आवासों तक पहुंचने की आशंका जताई गई है। यह अध्ययन 20 भारतीय राज्यों में 3,58,000 वर्ग किमी में फैले बाघों के आवासों पर आधारित है।

यह अध्ययन वन्यजीव संस्थान के दो वैज्ञानिकों निनाद अविनाश मुंगी और उमर कुरेशी द्वारा किया गया है। अध्ययन के मुताबिक, जैविक आक्रमण से जैव विविधता और लोगों को खतरा है, जिससे भारत जैसे विकासशील उष्णकटिबंधीय देश अधिक असुरक्षित है।

जर्नल ऑफएप्लाइड इकोलॉजी में प्रकाशित पांच साल के लंबे अध्ययन में 3.58.550 वर्ग किलोमीटर को कवर करने वाले 1.58 लाख जमीनी हिस्सों का अध्ययन किया गया। साथ ही देश में 11 सबसे प्रचलित आक्रामक प्रजातियों का पता लगाया गया है। अध्ययन में कहा गया है कि नमूनों में 31 प्रतिशत सवाना, 51 प्रतिशत शुष्क पर्णपाती जंगल, 40 प्रतिशत नम पर्णपाती जंगल, 29 प्रतिशत अर्ध.सदाबहार जंगल, 44 प्रतिशत सदाबहार जंगल और 33 प्रतिशत सवाना नम घास के मैदान शामिल थे।

अध्ययन के मुताबिक, 22 प्रतिशत प्राकृतिक इलाकों में सबसे अधिक नुकसान पहुंचाने वाले पौधों ने कब्जा किया है और ये 66 प्रतिशत प्राकृतिक क्षेत्रों को खतरे में डाल सकते हैं। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि ये अनुमान सांख्यिकीय रूप से सटीक पाए गए हैं। अध्ययन में कहा गया है कि, आक्रामक प्रजातियों के कब्जे के लिए सवाना सबसे अधिक यानी 87 प्रतिशत उपयुक्त पाया गया, इसके बाद नम घास के मैदान और शुष्क पर्णपाती जंगल लगभग 72 प्रतिशत थे, जबकि सदाबहार जंगल अपेक्षाकृत 42 प्रतिशत यानी कम उपयुक्त पाए गए थे।

अध्ययन में शामिल 11 आक्रामक पौधों की प्रजातियों में लैंटाना कैमारा को सबसे अधिक आक्रामक पाया गया, जो कब्जा किए गए प्राकृतिक आवास के लगभग 50 प्रतिशत के लिए जिम्मेवार है। अध्ययन में कहा गया है कि मिकानिया माइक्रंथा का विस्तार अपेक्षाकृत कम देखा गया और यह मुख्य रूप से नम घास के मैदानों और जंगलों में पाया गया था। अध्ययन में यह भी पाया गया कि, पशुओं को चराने और जलवायु परिवर्तन से प्रेरित कृषि.जलवायु स्थितियों के रूप में मानवजनित गड़बड़ी ने आक्रामक प्रजातियों के फैलने को और सुविधाजनक बना दिया है। अध्ययन में कहा गया है कि आक्रामक प्रजातियों में मूल प्रजातियों पर कब्जा करने और प्राकृतिक चारे और आवास की गुणवत्ता को प्रभावित करने की क्षमता होती है। मानवजनित बदलावों से पूरे भारत में आक्रामक प्रजातियों की कब्जा करने की क्षमता में बढ़ोतरी हुई है। अन्य पर्यावरणीय कारणों के प्रभाव को मोटे तौर पर सूखी और नमी वाली प्रणालियों में अलग किया जा सकता है। अध्ययन में कहा गया है कि पानी की निकटता शुष्क प्रणालियों के आक्रामक पौधों को सुविधाजनक बनाती है, जबकि आग की निकटता नमी वाली प्रणालियों के आक्रामक पौधों को सुविधाजनक बनाती है।

अध्ययनकर्ता ने कहा कि यह पहली बार है कि देशव्यापी सर्वेक्षणों के माध्यम से समस्या की भयावहता का दस्तावेजीकरण किया गया है। अध्ययन में भारी आक्रामक संभावित क्षेत्रों की पहचान की गई है और यह सरकार को उनसे निपटने के लिए नीतियां बनाने में मदद कर सकता है, क्योंकि उनमें पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट करने की क्षमता है। अध्ययन में मध्य भारत और पश्चिमी घाट में सबसे अधिक आक्रामक प्रजातियां पाई गई, जहां 2022 बाघ गणना के अनुसार, भारत के 3.682 बाघों में से लगभग आधे इन हिस्सों में रहते हैं। अध्ययन में कहा गया है कि, पर्यावरण मंत्रालय ने पहले ही बाघों के आवासों में आक्रामक प्रजातियों की समस्या की पहचान कर ली है। मंत्रालय ने बाघ मूल्यांकन पर व्यापक परियोजना के साथ इसे एक साथ जोड़ कर राष्ट्रीय स्तर पर आक्रामक पौधों की निगरानी लागू की है।

2018 में बाघों के आकलन के लिए किए गए सर्वेक्षणों का उपयोग करते हुएए वन्यजीव संस्थान के वैज्ञानिकों ने पाया कि भारत के दो.तिहाई प्राकृतिक क्षेत्र मानवजनित बदलावों के कारण कई पौधों के आक्रमण की जद में हैं।

अध्ययन में कहा गया है कि भारतीय वनों में आक्रामक प्रजातियों के एकमुश्त प्रबंधन के लिए 13.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता होगी, जो एक कठिन कार्य होगा और इसलिए जैव विविधता की बहाली को बढ़ाने के लिए कम से कम कब्जे वाले क्षेत्रों की पुनर्स्थापना को प्राथमिकता देने की सिफारिश की गई है।

गंभीर सूखे से प्रभावित रहा भारत का 20 फीसदी क्षेत्र, अमेरिकी वेदर रिपोर्ट में किया दावा

हलधर किसान नई दिल्ली। अमरीका की राष्ट्रीय मौसम एजेंसी. नोआ ने वर्ष 2023 को वैश्विक स्तर पर अब तक का सबसे गर्म साल बताते हुए कहा है कि भारत में कम से कम 20 प्रतिशत क्षेत्र अभी गंभीर सूखे की चपेट में फंसा हुआ है।

मौसम एजेंसी के मुताबिक इंडिया ड्राउट मॉनिटर पर इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि भारत के उत्तरी, पूर्वी एवं दक्षिण.पश्चिमी तटीय भाग में सूखे की स्थिति बनी हुई है और इस तरह देश का लगभग 21.6 प्रतिशत हिस्सा सूखे की चपेट में है।

इससे भारत में गहरी चिंता उत्पन्न हो गई है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के आंकड़ों से पता चलता है कि अक्टूबर के आरंभ से अब तक देश के एक.तिहाई से अधिक भाग में बारिश का भारी अभाव देखा जा रहा है। नोआ का आंकड़ा 13 अक्टूबर तक का है। नोआ के अनुसार सितम्बर का महीना एशिया के बहुत विशाल क्षेत्र में सामान्य स्तर से ज्यादा शुष्क एवं गर्म मौसम रहा। सितम्बर में औसत वैश्विक तापमान 20 वीं शताब्दी के औसत स्तर 15 डिग्री सेल्सियस से 1.44 डिग्री सेल्सियस ऊपर रहा। अमरीका की एक अन्य एजेंसी के अनुसार इस बात के 99 प्रतिशत से ज्यादा आसार हैं कि 2023 का साल विश्व पर अब तक का सबसे गर्म वर्ष साबित हो सकता है। सितम्बर का महीना पिछले 174 वर्षों में सबसे गर्म रहा। इससे दुनिया के कई भागों में कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्र प्रभावित हुआ। वहां कम बारिश होने से पानी का संकट बढ़ गया और खेतों की मिटटी सूख गई। सभी महाद्वीपों में इससे कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ा है। लगातार छठे माह.सितम्बर में विश्व स्तर पर महासागरों की सतह का मासिक तापमान रिकॉर्ड ऊंचे स्तर पर बरकरार रहा। अगस्त में यह सर्वोच्च स्तर पर पहुंचा था। उस समय भारत सहित कई देशों में बारिश का भारी अभाव रहा। ऑस्ट्रेलियाई मौसम ब्यूरो ने भी कुछ इसी तरह का अनुमान लगाया है। उसका कहना है कि अप्रैल.सितम्बर 2023 की छमाही के दौरान वैश्विक स्तर पर समुद्र की सतह का तापमान अब तक का सबसे ऊंचा रहा। प्रशांत महासागर के उत्तरी, पश्चिमी एवं दक्षिणी.पश्चिमी भाग के साथ.साथ अटलांटिक महासागर एवं हिन्द महासागर में भी समुद्र की सतह का तापमान काफ यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी अमरीका एवं दक्षिणी अमरीका महाद्वीप के लिए इस बार सितम्बर का महीना सबसे ज्यादा गर्म रहा जबकि एशिया में यह दूसरा एवं ऑस्ट्रेलिया में तीसरा सबसे गर्म महीना साबित हुआ।

एजेंसी देना है-

प्रतिष्ठित मासिक समाचार पत्र हलधर किसान कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध, अनुसंधान, नई तकनिक, योजनाओं के राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समाचारों के समावेश के साथ नियमित रुप से प्रकाशित हो रहा है। अखबार की प्रतियां नियमित रुप से प्राप्त करने के लिए वार्षिक सदस्यता लेने, एजेंसी/ विज्ञापन प्रकाशन के लिए हमारे वाट्सअप नंबर(88174 02860) या हमारे प्रधान कार्यालय 598, वेगॉस मॉल, कार्पोरेट बिल्डिंग, एस.14 द्वारका साउथ वेस्ट, नई दिल्ली 110075 या मप्र में 762, बीज भंडार भवन, न्यू नूतन नगर खरगोन में संपर्क कर सकते है।

नोट: कृषि, उद्यानिकी, मछली पालन, ऊर्जा, पर्यावरण जैसे विषयों पर लिखे लेख प्रकाशन के लिए भी वाट्सअप नंबर पर भेज सकते है। आपके द्वारा भेजे गए लेख, शोधकार्य या कृषि के क्षेत्र में नई तकनिकी, सफलता हासिल करने संबंधित समाचार को भी प्रमुखता से प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

जलवायु परिवर्तन में भी चने की ये तीन किस्में देंगी बेहतर उपज

हलधर किसान 8817402860 चना रबी सीजन की मुख्य दलहन फसल है, देश में विश्व की 67 प्रतिशत चने की पैदावार होती है। भारत में चने का सर्वाधिक उत्पादन मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र तथा उत्तर प्रदेश में होता है। ऐसे में किसान चने की कम लागत में अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक तरीके से खेती कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। तबीजी फार्म के उपनिदेशक कृषि मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि चने के लिए लवण व क्षार रहित, जल निकास वाली उपजाऊ भूमि उपयुक्त रहती हैं। चने की बुवाई का उपयुक्त समय मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर हैं। उन्होंने बताया कि चने की फसल को कीट एवं रोगों से बचाकर उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी की जा सकती है। इसके लिए किसानों को बीजोपचार एवं रोग प्रतिरोधक किस्मों का प्रयोग करना चाहिए।

कार्यालय के कृषि अनुसंधान अधिकारी डॉ. जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि चने की फसल में जड़ गलन एवं सूखा जड़ गलन एवं उकठा जैसे हानिकारक रोगों का प्रकोप होता हैं। इन रोगों से बचाव के लिए ट्राइकोडर्मा से भूमि उपचार करना चाहिए। भूमि उपचार करने के लिए बुवाई से पूर्व 10 किलो ट्राइकोडर्मा को 200 किलो आद्रता युक्त गोबर की खाद में मिलकर 10.15 दिन छाया में रखें। इस मिश्रण को बुवाई के समय प्रति हेक्टेयर की दर से पलेवा करते समय मिट्टी में मिला दें साथ ही रोग प्रति रोधी किस्मों का उपयोग करें। इसके साथ ही बीजों को 1 ग्राम कार्बे.डाजिम एवं थीरम 2.5 ग्राम या ट्राईकोर्डमा 10 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बुआई करें।

चने की फसल में दीमक, कटवर्म एवं वायर वर्म की रोकथाम के लिए क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से आखिरी जुताई से पूर्व छिड़काव करें। चने की फसल में दीमक से बचाव के लिए बीजों को फिप्रोनिल 5 एससी 10 मिली या इमीडाक्लोप्रिड 600 एफएस का 5 मिली प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार कर बुवाई करें।

जलवायु परिवर्तन के जोखिम को कम करने के लिए जलवायु अनुकूल खेती एक बेहतर विकल्प है। जलवायु ऐसा फैक्टर है जिसका प्रभाव जीव.जंतु, पेड़.पौधों और खेती पर होता है। कृषि शोध संस्थान जलवायु परिवर्तन के जोखिम को कम करने के लिए फसलों की नई किस्में विकसित कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया में पहले से ही तापमान में वृद्धि दर्ज की जा रही है, इसलिए गर्मी और सूखा से सहनशील चने की किस्में भारतीय किसानों के लिए बहुत उपयोगी साबित हो सकती हैं। आईसीआरआईएसएटी के सहयोग से आईसीएआर के संस्थानों ने तीन नई चने की किस्में विकसित की हैं, जो जलवायु.लचीली और रोग.प्रतिरोधी हैं और इन किस्मों की खासियतों को जानते है।

चने की नई किस्मों की खेती करें किसान

बदलते जलवायु परिवर्तन के हिसाब से जलवायु अनुकुल चने की सूखा सहने की क्षमता, रोग प्रतिरोधक क्षमता और अधिक उपज देने वाली चने की तीन नई किस्में विकसित की गई हैं। इन किस्मों को भारतीय किसानों के लिए साल 2021 में केंद्रीय किस्म विमोचन समिति द्वारा खेती के लिए अधिसूचित किया गया थाए कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक, भारत के चना उत्पादक क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन और सूखे के कारण चने की उपज सालाना 60 फीसदी तक घट जाती है। बदलती जलवायु परिस्थितियों में चने तीन नई किस्में आइपीसीएल 4.14, पूसा 4005 और समृद्धि किसानों के लिए बेहतर उपज दिला सकती हैं। वर्षा आधारित क्षेत्र हो या सिंचाई क्षेत्र, दोनों जगहों में ये किस्में बढ़ते तापमान और सूखे की परिस्थितियों में बेहतर उत्पादन दे सकती हैं।

सूखे में भी ये किस्म देगी अधिक उपज

आइपीसीएल 4.14 चने की किस्म साल 2021 में रिलीज की गई थी और इस किस्म को भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर द्वारा विकसित किया गया हैए इसका प्रति एकड़ उत्पादन 7 से 8 क्विंटल होता है। यह किस्म 128 से 133 दिनों में तैयार हो जाती है। इस किस्म को भारत में चने की खेती को प्रभावित करने वाली जलवायु परिस्थितियों और अन्य कारकों से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए विकसित किया गया है। इस किस्म की खेती से वातावरण में सूखे की स्थिति में बेहतर उत्पादन मिल सकता है। इस किस्म को पंजाब, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर के मैदानी इलाकों, राजस्थान के कुछ हिस्सों और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए जारी किया गया है। यह सिंचित और समय पर बुवाई के लिए बेहद बेहतर किस्म है। यह किस्म विल्ट, कॉलर रोट, स्टंट रोगों के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी और शुष्क जड़ सड़न के प्रति मध्यम रूप से सहनशील है।

पूसा 4005 जलवायु चुनौती में भी बेहतर

पूसा 4005, यानी बीजीएम 4005, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित गई है और इसे 2021 में खेती के लिए जारी किया गया था। इसकी उपज क्षमता सूखे की परिस्थितियों में प्रति एकड़ 8 क्विंटल होती है। यह किस्म लगभग 130 से 131 दिनों में तैयार हो जाती है। इस किस्म को भारत में चने की खेती को प्रभावित करने वाली जलवायु परिस्थितियों और अन्य कारकों से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए विकसित किया गया हैए इस किस्म को पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए जारी किया गया है। यह किस्म विल्ट यानी उकठा रोग, कॉलर रोट, स्टंट रोगों के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है और शुष्क जड़ सड़न के प्रति मध्यम रूप से सहनशील है।

समृद्धि किस्म इन राज्यों के लिए बेहतर

समृद्धि 19.3 देसी किस्म है, जिसे भारतीय दलहन अनुसंधान केंद्र कानपुर ने विकसित किया है। इसे 2021 में किसानों के लिए खेती के लिए जारी किया गया थाए यह उकठा रोग के प्रति प्रतिरोधी किस्म है और सिंचित स्थिति में खेती के लिए बेहतर है। इसकी उपज क्षमता प्रति एकड़ 8 से 9 क्विंटल है। इस किस्म की खेती मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और यूपी के बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए बेहतर है। यह किस्म 100 से 110 दिनों में पककर तैयार हो जाती है।

चने की बुवाई के समय इन बातों का रखें ध्यान

चने की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 से 30 अक्टूबर तक है। निचले क्षेत्रों में चने की बुवाई नवंबर में करनी चाहिए। चने की खेती चिकनी दोमट या बारीक दोमट मिट्टी वाले खेतों में करनी चाहिए। सीड ड्रिल से 6 से 8 सेमी. गहराई पर बोनी चाहिए और लाइन से लाइन की दूरी 30 से 45 सेमी होनी चाहिए। चने की बुवाई के लिए छोटे आकार की किस्म का बीज दर 26 किलोग्राम, मध्यम आकार के चने की किस्म का बीज दर 30 किलोग्राम और बड़े दाने वाली किस्म का बीज दर 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से बोना चाहिए।

चने का बीज बोने से पहले बीज का उपचार करना न भूलें

चने का बीज बोने से पहले बीज का उपचार करना न भूलें, क्योंकि इसमें उकठा रोग, रतुआ रोग, शुष्क जड़ रोग का प्रकोप अधिक होता है। इसलिए बीज बोने से पहले बीज का उपचार करें। चने के उकठा रोग और गलन रोग की रोकथाम के लिए 2.5 ग्राम थीरम या 1 ग्राम बाविस्टिन प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। कीटों से रोकथाम के लिए क्लोरपाइरीफोस 1 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपाचारित करें। इसके बाद चने की अधिक पैदावार के लिए राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। 200 ग्राम कल्चर का एक पैकेट 10 किलोग्राम बीज उपचार के लिए पर्याप्त है। कल्चर को बाल्टी में घोलकर 10 किलो बीज डालकर अच्छी तरह मिला लें ताकि सभी बीज अच्छी तरह मिल जाएं, कुछ समय बाद चने की बुवाई करनी चाहिए।

मोजांबिक से तुअर दाल की आपूर्ति में जुटी सरकार केंद्र ने उच्चायुक्त से कि व्यापारिक मुद्दो पर चर्चा

हलधर किसान (88174 02860)। घरेलू बाजार में तुअर दाल के बढ़ते दामों पर नियंत्रण के लिए भारत सरकार ने मोज़ाम्बिक से दालें खरीदीं लेकिन व्यवधानों के कारण निर्यात में देरी हो रही है। इस स्थिति के जवाब में केंद्र ने मोजाम्बिक सरकार से बंदरगाह प्रक्रियाओं को शीघ्रता से पूरा कर दाल की खेप भेजने का आह्वान किया।

उपभोक्ता कार्य विभाग के सचिव ने मोज़ाम्बिक बंदरगाहों पर प्रतीक्षारत तुअर निर्यात खेपों की शीघ्र निकासी पर जोर दिया भारत में उपभोक्ताओं के लिए तुअर की उपलब्धता और इसके किफायती होने को सुनिश्चित करने के लिए तुअर की उपलब्धता बढ़ाने की मंजूरी दी है।

उपभोक्ता कार्य विभाग के सचिव रोहित कुमार सिंह ने मोजाम्बिक के उच्चायुक्त महामहिम एर्मिडो, पेरेरिया के साथ तूअर से संबंधित व्यापार और अन्य मुद्दों पर चर्चा के लिए बैठक की। जुलाई 2023 से मोजाम्बिक में पैदा हुई प्रक्रियात्मक बाधाओं पर चिंता व्यक्त की और कहा कि इसके कारण देश से तुअर निर्यात खेप को भेजने में देरी हो रही है। उन्होंने उच्चायुक्त से मोजाम्बिक से तुअर के निर्बाध निर्यात को सुनिश्चित करने के लिए ठीक उस रूप में हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया, जैसा भारत सरकार ने आयात को सुचारू और निर्बाध बनाने के लिए आवश्यक नीतिगत उपाय किए हैं। इस संबंध में उपभोक्ता कार्य विभाग के सचिव ने महामहिम एर्मिडो, पेरेरिया को मोजाम्बिक बंदरगाहों पर मंजूरी की प्रतीक्षा कर रहे तुअर निर्यात खेप के बारे में जानकारी दी तथा इनकी शीघ्र मंजूरी की आवश्यकता पर बल दिया। इस बात पर भी जोर दिया गया कि तुअर के व्यापार के लिए द्विपक्षीय समझौता ज्ञापन को बरकरार रखने की जरूरत है, क्योंकि यह दोनों देशों के उत्पादकों और उपभोक्ताओं के प्रति भारत और मोजाम्बिक की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। उच्चायुक्त महामहिम एर्मिडो, पेरेरिया ने मोजाम्बिक में समग्र कृषि इकोसिस्टम के लिए भारत और मोजाम्बिक के बीच व्यापार संबंधों के महत्व पर जोर दिया।

हर साल 30 लाख टन तक दालों का होता है आयात

उन्होंने आश्वासन दिया कि तुअर व्यापार से संबंधित मौजूदा मुद्दों को हल करने और मोज़ाम्बिक से भारत में तुअर निर्यात के सुचारू प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।

उपभोक्ता कार्य विभाग के सचिव और मोजाम्बिक के उच्चायुक्त के बीच इस समय हुई बैठक महत्वपूर्ण है, क्योंकि मोजाम्बिक से आयात के सुचारू प्रवाह से आने वाले महीनों के दौरान तुअर की उपलब्धता बढ़ेगी और भारतीय उपभोक्ताओं के लिए उपलब्धता तथा इसका किफायती होना सुनिश्चित होगा। घरेलू बाजार में बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए भारत में प्रत्येक वर्ष 25.30 लाख टन तक दालों का आयात किया जाता है।।

दिसंबर में आयोजित किया जाएगा कृषि कुम्भए किसानों को बताई जाएगी देश.विदेश की तकनीकें

हलधर किसान। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार इस वर्ष कृषि कुंभ 2.0 का आयोजन करने जा रही है। जिसको लेकर यूपी के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने बताया कि दिसंबर के दूसरे पखवाड़े में होने वाले कृषि कुम्भ को ऐतिहासिक और तकनीकी रूप से सशक्त किया जाएगा। जिसमें तमाम कृषि संगठन हिस्सा लेंगे, जो अपने/ अपने देश की तकनीक बताएंगे। आयोजन का उद्देश्य प्रदेश की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को 1 ट्रिलियन डालर के स्तर पर ले जाने के लिए किसानों को उत्पादक से उद्यमी बनाना, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देकर पोषण, पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य के साथ/ साथ भविष्य की जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने की तैयारी है। खेती की लागत कम करने, किसानों की आय बढ़ाने और स्वास्थ्य तथा पोषण की दृष्टि से श्री अन्न को बढ़ावा देना है। इसे एक ग्लोबल इवेंट की तरह आयोजित किया जाएगा। कृषि कुम्भ में 19 सत्र होंगे, जिसमें देश/ विदेश के वैज्ञानिक तकनीक बताएंगे। अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के भी स्टॉल लगेंगे। सरकार की कोशिश है कि इसमें 500 संगठन हिस्सा लें। इसमें डिजिटल कृषि, उद्यान को बढ़ावा, गन्ना, पशु धन और चारा उत्पादन पर भी चर्चा होगी। वहीं प्रोसेसिंग इकाई का भी प्रदर्शन होगा। शाही ने कहा कि श्रीअन्न उत्पादन में प्रतिस्पर्धा बढ़ने, जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए किसानों को जागरूक करने, प्राकृतिक खेती, जल संरक्षण और किसानों को उद्यमी बनाने को लेकर चर्चा होगी। कब आयोजित किया जाएगा कृषि कुम्भ 2023 कृषि मंत्री ने जानकारी देते हुए बताया कि कृषि कुंभ का द्वितीय संस्करण (अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी एवं सम्मेलन) का आयोजन इस वर्ष दिसंबर के द्वितीय पखवाड़े यानि की 15 दिसंबर के बाद किया जाएगा। यह कार्यक्रम भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान तेलीबाग़ए लखनऊ के परिसर में आयोजित होगा। कृषि मंत्री ने जानकारी देते हुए बताया कि दिसंबर में आयोजित होने वाला यह कृषि कुंभ 4 दिनों के लिए आयोजित किया जाएगा। इस बार का कुंभ पिछले कृषि कुंभ 2018 के मुकाबले अधिक भव्य और दिव्य बनाने की सरकार की योजना है ताकि किसान तकनीक तरक्की की ओर बढ़ सकें।

जलवायू परिवर्तन का खेती- किसानी पर गहरा असर

लवायू परिवर्तन का सबसे अधिक असर खेती- किसानी पर पड़ रहा है। हर साल सर्दी, गर्मी, बरसात का चक्र असंतुलित और मिजाज अलग होता है। इस वर्ष बारिश की बात करें तो पहले तीन माह देश के कई राज्यों में रुक- रुककर बारिश हुई तो वही मप्र में सितंबर माह में जमकर बारिश हुई, जिसका सीधा असर फसलों पर गिरा। आमतौर पर मप्र में कपास, मिर्च की फसल सितंबर माह में तैयार हो जाती है, जब मप्र में यह फसलें पूरे यौवन पर थी तो तेज बारिश और हवा के चलते यह फसलें जमीन पर लौट गई, कई खेतों से तो फसलें उपजाऊ मिट्टी के साथ बह निकली। इससे कटाई में तो मुश्किलें आई बल्कि उत्पादन पर भी असर देखा जा रहा है। अब रबी सीजन में भी मौसम के मिजाज में परिवर्तन देखा जा रहा है। रबी सीजन की बुआई के लिए किसान खेतों को तैयार करने में जुट गए है, लेकिन बुआई में देरी काअनुमान लगाया जा रहा है। वैसे ही सर्दी के मौसम का समय साल दर साल कुछ छोटा होने लगा है। गेहूं की फसल को उचित ठंड न मिलने के कारण उनमें पर्याप्त दाने पोषित नही हो पाते। यही कारण है कि अब वैज्ञानिक तापमान अनुकूल फसलें लगाने के सुझाव देने लगे है। जलवायू प्रतिरोधी बीजों की मांग बढ़ गई है।

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक मुद्दे के रूप में उभर कर आया है। जलवायु परिवर्तन कोई एक देश या राष्ट्र से संबंधित अवधारणा नहीं है अपितु यह एक वैश्विक अवधारणा है जो समस्त पृथ्वी के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। देखा जाए तो जलवायु परिवर्तन से भारत सहित पूरी दुनिया में बाढ़, सूखा, कृषि संकट एवं खाद्य सुरक्षा, बीमारियां, प्रवासन आदि का खतरा बढ़ा है। चूंकि भारत का एक बड़ा तबका ;लगभग 60 प्रतिशत आबादी आज भी कृषि पर निर्भर है, और इसके प्रभाव के प्रति सुभेद्य है इसलिए कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को देखना बहुत जरूरी हो जाता है।

संपादकीय

ग्लोबल क्लाइमेट रिस्क इंडेक्स 2021 के अनुसार, भारत जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित दस शीर्ष देशों में शामिल है। जलवायु की बदलती परिस्थितियां कृषि को सबसे अधिक प्रभावित कर रहीं हैं क्योंकि लम्बे समय में ये मौसमी कारक जैसे तापमान, वर्षा, आर्द्रता आदि पर निर्भर करती है। अत: इस लेख में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि जलवायु परिवर्तन कृषि को कैसे प्रभावित करता है।

भारत दुनिया का बड़ा चावल निर्यातक देश है, लेकिन साल दर साल मानसून के बिगड़ते चक्र से इसकी उपज पर असर देखा जा रहा है। बारिश अपने समय पर न होकर विलंब से आती और समाप्त होती री है, जिससे घरेलू जरूरतें पूरा करना भी कठिन हो सकता है। घरेलू जरूरतें पूरी करने के लिए सरकार को पिछले वर्ष गेहूं के निर्यात पर पाबंदी लगाने का निर्णय लेना पड़ा था, जबकि इस साल बासमती चावल के निर्यात को संतुलित किया गया था। यही स्थिति दलहनी और तिलहनी फसलों के मामले में भी है। जलवायु परिवर्तन से पैदा संकट पर काबू पाने के लिए दुनिया के तमाम देश हर वर्ष कार्बन उत्सर्जन कम करने का संकल्प लेते है। मगर अभी तक वह संकल्प केवल कागजी साबित हुआ है। इसे लेकर औद्योगिक उत्पादन करने वाले देशों की तरफ से गंभीर कदम उठाना जरूरी हो गया है। जिन देशों में हर समय सर्दी और बर्फ पड़ा करती थी, उनमें अब लू चलने लगी है। इस तरह जलवायु परिवर्तन की पीड़ा पूरी दुनिया झेल रही है इसका सबसे चिंताजनक प्रभावी कृषि उत्पादन पर पड़ा है। मगर अफसोस कि औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने की होड़ में कुदरत को सहेजने संभालने की चिंता कहीं नहीं दिखती।

11 या 12 नवंबर को मनेगा दीपोत्सव, जाने क्यों है तिथि को लेकर असमंजस

हलधर किसान (ज्योतिष)। दीपो, खुशियों, परंपराओं का त्योहार दीपोत्सव जल्द आने वाला है। दिवाली का त्योहार आने में सिर्फ कुछ ही समय बाकी है। इस बीच बहुत से लोग दिवाली के त्योहार की तारीख को लेकर लोग असमंजस में हैं। कोई 11 नवंबर तो कुछ लोग 12 नवंबर को दिवाली का त्योहार बता रहे हैं।

ऐसे में इस असमंजस कि स्थिति को दूर करते हुए ज्योतिषचार्य डॉ. सुदीप जैन (सोनी) अजमेर का कहना है कि पंचांग के अनुसार, कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि 11 नवंबर को दोपहर 01 बजकर 57 मिनट से शुरू होगी, जो अगले दिन 12 नवंबर को दोपहर 02 बजकर 44 मिनट पर समाप्त होगी। इसके बाद अमावस्या तिथि शुरू होगी। कार्तिक माह की अमावस्या तिथि 12 नवंबर को दोपहर 02 बजकर 44 मिनट से शुरू होगी और अगले दिन 13 नवंबर को दोपहर 02 बजकर 56 मिनट पर समाप्त होगी। सनातन धर्म में उदया तिथि मान्य है। हालांकि, दिवाली तिथि पर प्रदोष काल में धन की देवी मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है। अतः 12 नवंबर को दिवाली मनाई जाना उचित होगा। ज्योतिषियों की मानें तो कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि यानी दिवाली पर लक्ष्मी पूजन का सही समय संध्याकाल 05 बजकर 39 मिनट से लेकर संध्याकाल 07 बजकर 35 मिनट तक है। इस समय अवधि में धन की देवी मां लक्ष्मी और रिद्धि.सिद्धि के दाता भगवान गणेश की पूजा कर सकते हैं।

प्राकृतिक तरीकों से बंजर जमीन भी हुई उपजाऊ

हलधर किसान। रासायनिक उर्वरक के बढ़ते प्रयोग के चलते खेतों की मिट्टी की सेहत खराब हो रही है। वहीं उत्तर प्रदेश में गिरती हुई मिट्टी की सेहत को सुधारने के लिए आचार्य नरेंद्र देव कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा एक खास तरह का प्रयोग भी किया जा रहा है। विश्वविद्यालय में 10 एकड़ से ज्यादा बंजर भूमि पर प्राकृतिक तरीकों से उपजाऊ बनाने का प्रयोग किया गया जो पूरी तरह सफल रहा। विश्वविद्यालय परिसर में कभी बंजर सी दिखने वाली जमीनों पर खूब फसल लह.लहा रही है। यहां तक की कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति के द्वारा बंजर से उपजाऊ हुई जमीनों पर रासायनिक उर्वरक की निर्भरता को भी कम करने के लिए प्रयोग किया जा रहा है, जिसका सकारात्मक परिणाम अब दिखने लगा है। आचार्य नरेंद्र देव कृषि विश्वविद्यालय के परिसर में बंजर जमीन को उपजाऊ बनाने के साथ.साथ कैसे मिट्टी की सेहत को सुधारा जाए इस पर किसानों को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है।

इस विश्वविद्यालय के प्रयासों से सुधरी मिट्टी की सेहत

मिट्टी की सेहत सुधा में हुआ तेजी से सुधार

मिट्टी की सेहत में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा में लगातार गिरावट हो रही है। सामान्य रूप से जिस मिट्टी में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा अधिक होती है उसमें पैदावार अच्छी होती है और उपज की गुणवत्ता भी अच्छी रहती है। आमतौर पर खेती में रासायनिक खाद और कीटनाशक का इस्तेमाल करने पर मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा घट जाती है और इससे वहां पैदावार भी प्रभावित होती है। एक खेत में प्राकृतिक तरीके से जैविक कार्बन की मात्रा को एक प्रतिशत बढ़ाने में 100 साल से भी अधिक का समय लगता है जबकि जिस खेत की मिट्टी में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा .5 फ़ीसदी से कम हो जाती है वह मिट्टी धीरे.धीरे बंजर हो जाती है। उनके फार्म में प्राकृतिक विधि के प्रयोग से खेतों में आयुर्वेदिक कार्बन की मात्रा में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। पिछले 1 साल में ही उनके प्रयोग के द्वारा इस तरह का बदलाव देखने को मिला है। उन्होंने बंजर जमीनों को उपजाऊ बनाने तथा मिट्टी की सेहत सुधारने के लिए गोबर, गोमूत्र, गुड़ और सूखे पत्तों का इस्तेमाल किया है।

जैविक और प्राकृतिक खेती के लिए यह तकनीक काफी फायदेमंद है। खेत में ऑर्गेनिक कार्बन को बढ़ाने के लिए किसानों को 1 किलो गोबर,1 लीटर गोमूत्र, 50 ग्राम गुड़ और 10 लीटर पानी को अच्छे से घोल को मिलाकर 3 दिन रख दें। फिर खेत में सिंचाई के साथ इस प्रयोग करें। इससे मिट्टी की सेहत में बड़ा बदलाव दिखेगा।

रासायनिक उर्वरक के बिना भी ऐसे मिलेगी भरपूर पैदावार

विश्वविद्यालय की बंजर जमीनों पर एक खास तरह का प्रयोग किया जा रहा है। परिसर के फॉर्म में एक चार्ट बनाया है जिसमें 2022 से शुरू किए गए प्रयोग में जमीन के पीएच का स्तर और ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा को दर्शाया गया है। यहां खेतों में यूरिया की मात्रा को घटाने का प्रयास किया जा रहा है। हर साल रासायनिक उर्वरक की मात्रा में 10 फीसदी की कमी करते जा रहे हैं। इससे वह धीरे.धीरे रासायनिक उर्वरक के ऊपर हमारे खेतों की निर्भरता को कम करने का प्रयास कर रहे हैं जिससे कि आने वाले 5 से 6 सालों में प्राकृतिक विधि से भी भरपूर उत्पादन मिलेगा।

इस प्राकृतिक विधि से बंजर जमीन भी हो गई उपजाऊ

उत्तर प्रदेश में आज भी 8 लाख हेक्टेयर से ज्यादा बंजर और अनुपजाऊ जमीन है। सरकार के द्वारा इन जमीनों को उपजाऊ बनाने के लिए प्रयास भी किया जा रहे हैं। इसी दिशा में आचार्य नरेंद्र देव कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बिजेंद्र सिंह के द्वारा एक खास तरह का मॉडल तैयार किया गया है। विश्वविद्यालय परिसर में 10 एकड़ से ज्यादा बंजर जमीनों को प्राकृतिक विधि से उपजाऊ बनाया गया है। पिछले 1 साल से इन जमीनों पर धान और गेहूं की अच्छी पैदावार भी हो रही है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बिजेंद्र सिंह ने बताया कि उन्होंने गाय के गोबर और गोमूत्र को मिलाकर बीजामृत, जीवामृत के प्रयोग से बंजर जमीन को उपजाऊ ही नहीं बनाया बल्कि मिट्टी में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा भी बढ़ा दी है जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार हुआ है।

अब लवणीय भूमि पर लहलहाएगी मसूर की फसल, वैज्ञानिकों ने तैयार की नई किस्में

हलधर किसान। हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में जिस लवणीय भूमि में मसूर का एक दाना भी नहीं होता है, लेकि इन इलाकों में मसूर की फसल लहलहाएगी। इसके लिए, करनाल के केंद्रीय मृदा एवं लवणता अनुसंधान संस्थान और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली के वैज्ञानिकों ने शोध के बाद मसूर की दो नई किस्मों के बीज तैयार किए हैं, जो अब शीघ्र किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा।

खास बात ये है कि नई किस्मों के बीज से तैयार मसूर की दाल स्वादिष्ट और पौष्ठिक भी होगी, क्योंकि इसमें प्रोटीन की मात्रा सामान्य मसूर से अधिक होगी। वैज्ञानिकों के अनुसार दाल कुलीय फसलें नमक के प्रति

अतिसंवेदनशील होती हैं। यही कारण है कि मिट्टी में नमक की थोड़ी सी भी मात्रा ये फसलें बर्दाश्त नहीं कर पाती हैं। इन फसलों के लिए मीठे जल वाली सिंचाई और मिट्टी की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि देश के एक बड़े हिस्से में दाल कुलीय फसलों की पैदावार कम होती है। मिट्टी में लवणता एवं क्षारियता सुधार के लिए केंद्रीय मृदा एवं लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल की ओर से लगातार प्रयास किया जा रहा है। निदेशक डॉ. आरके यादव ने बताया कि संस्थान में कई फसलों के लवण सहनशील किस्मों पर शोध कार्य चल रहा है। इससे पहले सीएसएसआरआई करनाल की वैज्ञानिक (आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन) डॉ. विजयता सिंह और उनकी टीम ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली,जिसे पूसा संस्थान भी कहा जाता है के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. धर्मेंद्र सिंह और उनकी टीम के साथ मिलकर मसूर की लवण सहनशील किस्मों पर शोध शुरू किया था। इसके बाद बीज की दो किस्में पीडीएल.1 और पीएसएल.9 तैयार की गई।

कृषि किस्म विमोचन के लिए केंद्रीय उप समिति ने इन किस्मों का विमोचन तो 2019 में ही कर दिया था लेकिन इनका बीज तैयार करने की प्रक्रिया 2020.21 में शुरू हुई। तैयार होने के बाद इस साल सीएसएसआरआई द्वारा इन दोनों किस्मों के बीज का वितरण शुरू किया गया है। माना जा रहा है कि इससे हरियाणा सहित अन्य राज्यों में लवणीय भूमि पर भी मसूर दाल की फसल लहलहा सकेगी।

यह होगी खासियत

दोनों मसूर की किस्में लवण सहनशील हैं, यानी ये फसलें वहां बेहतर पैदावार के साथ उगाई जा सकती हैं, जहां अब तक दाल कुलीय फसलें होती ही नहीं थीं। ये किस्में 108 से 116 दिन में पक कर तैयार हो जाएंगी। पौधे की लंबाई 30 से 32 सेमी है। ये दोनों किस्में लवणग्रस्त मिट्टी वाले खेतों में 11 से 16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और सामान्य खेतों में 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की पैदावार देंगी। क्षारीयता की सहनशीलता 8.8 पीएच मान तक होगी। लवणता यानी ईसी मान 7 डेसी साइमन प्रति मीटर तक की होगी। इन किस्मों की बुवाई 15 अक्टूबर से सात नवंबर तक की जा सकती है।

अच्छी खबरः प्रदूषण नहीं अब पैसा कमाकर देगी पराली, यूपी में तैयार हो रहा ग्रीन एनर्जी प्लांट

पेट्रोल-डीजल पर निर्भरता भी होगी कम, मिलेगा रोजगार

हलधर किसान

88174 02860 . उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए राहत भरी खबर है। बुलंद शहर में में पराली से कंप्रेस्ड गैस (सीएनजी) का उत्पादन होगा, जिससे आय के साथ.साथ बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार भी मिलेगा। इसके साथ ही शुद्ध जैविक खाद (ग्रीन एनर्जी) का भी उत्पादन होगा, जिसके इस्तेमाल से होने वाली पैदावार के सेवन से बेहतर स्वास्थ्य सुनिश्चित हो सकेगा। वहीं खेतों में पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण से जल्द निजात मिलेगी।

सीएम योगी ने प्रदेश में जैव ऊर्जा को प्रोत्साहित करने के लिए जैव ऊर्जा नीति 2022 को जारी किया था। इस नीति के तहत बड़े पैमाने पर निवेश का लक्ष्य रखा गया था। कई बड़े निवेशकों ने ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में प्रदेश सरकार के साथ एमओयू किया था, जो अब धरातल पर उतरने जा रहा है। योगी सरकार ने हर तहसील में बायोगैस प्लांट का लक्ष्य रखा था, जिसमें से कुछ जल्द ही शुरू होने को तैयार हैं।

3 टन सीएनजी का उत्पादन होगा

जो प्लांट शुरू होने को तैयार हैं उनमें बुलंदशहर का बुलंद बायोगैस भी है, जिसकी स्थापना ग्राम लौहगला तहसील में हो रही है। बुलंद बायोगैस ने प्रदेश सरकार के साथ 18.75 करोड़ रुपए का एमओयू किया था, जिसकी कॉस्ट बढ़कर अब 21 करोड़ रुपए हो गई है। यह प्लांट दिसंबर में अपना उत्पादन शुरू कर देगा। इस प्लांट से प्रतिदिन 3 टन सीएनजी का उत्पादन होगा, जिससे प्रदेश में पेट्रोल.डीजल पर निर्भरता कम होगी। वहीं 80 से 100 लोगों को रोजगार भी मिलेगा। इनमें स्किल्ड और अनस्किल्ड दोनों तरह के लोगों को रोजगार प्राप्त होगा। बुलंद बायो गैस के ओनर अतहर अहमद ने बताया कि प्लांट में सिर्फपराली ही नहीं, बल्कि पुआल, गोबर, भूसा, गन्ने की मैली, म्युनिसिपल वेस्ट जैसे डिग्रेडेबल वेस्ट से कंप्रेस्ड बायोगैस या ये कहें कि सारी गैसों का मिक्सचर बनता है। इसको टेक्नोलॉजी की मदद से सीएनजी को प्यूरीफाई किया जाता है। इस प्लांट के लिए इंडियन ऑयल से लाइसेंस मिल चुका है।

जैविक खाद के उत्पादन से शुद्ध होगा खानपान

उन्होंने बताया कि इस प्रोजेक्ट की सबसे अच्छी बात ये ही इसमें बड़ी मात्रा में जैविक खाद का उत्पादन होगा। कंप्रेस्ड गैस के उत्पादन में जो वेस्ट निकलेगा वो 100 प्रतिशत जैविक होगा। यह वेस्ट सॉलिड भी होगा और लिक्विड भी। जो लिक्विड जैविक खाद होगी प्लांट की ओर से उसे 3 साल तक किसानों को मुफ्त दिया जाएगा। इन किसानों को डीएम या सीडीओ चिन्हित करेंगे। इससे उन किसानों को फायदा होगा जो फर्टिलाइजर, डीएपी, यूरिया नहीं खरीद पाते है।

जैविक खाद और लिक्विड खाद का ये फायदा है कि खेती उपजाऊ जमीनों में फर्टिलाइजर खादों की एक मोटी लेयर बिछ चुकी हैण् वह पेड़ पौधों की जड़ों तक पहुंचने में समय लेती है। वहीं, जैविक खाद को इसमें डालेंगे तो यह 2 से 3 घंटे में जड़ तक पहुंच जाएगी। इससे किसानों का तो फायदा होगा ही, साथ ही आम लोगों को भी शुद्ध जैविक फूड मिल सकेगा। शुद्ध खान.पान से लोगों की सेहत को फायदा होगा।

श्री अन्न महोत्सवः सीएम योगी बोले, वैश्विक खाद्यान संकट के वक्त श्री अन्न बनेगा सहारा

हलधर किसान. लखनऊ.
88174 02860

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में राज्यस्तरीय श्री अन्न प्रदर्शनी एवं कार्यशाला के शुभारंभ समारोह में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि श्री अन्न का महत्व वैदिक काल से रहा है। भविष्य में भी जब दुनिया खाद्यान संकट का सामना करेगी तो श्री अन्न की उपयोगिता बढ़ेगी। उत्तर प्रदेश श्री अन्न के उत्पादन का केंद्र बन सकता है। सीएम योगी ने इससे पहले तीन दिवसीय श्री अन्न महोत्सव का शुभारंभ करते हुए प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से आए श्री अन्न उत्पादकों की ओर से लगाये गे प्रदर्शनी का अवलोकन किया। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कोरोना काल ने हमें बड़ा सबक दिया है। हम जितना कृत्रिम जीवन जीने का प्रयास करेंगे, महामारियां हमें उतना ही परेशान करेंगी। हमें प्राकृतिक वास और जीवनशैली को अपनाना होगा और उसमें श्री अन्न बहुत ही सहायक होगा। इसकी उत्पादकता बढ़ाने के लिए शोध और अनुसंधान की आवश्यकता है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में शोध एवं अनुसंधान के लिए कार्य कर रही उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद् के 34वां स्थापना दिवस पर अगले तीन दिन तक श्री अन्न महोत्सव का आयोजन हो रहा है। ये महोत्सव यूपी के किसानों के जीवन में व्यापक परिवर्तन का माध्यम बनेगा। सीएम योगी ने कहा कि पिछली सदी के छठे और सातवें दशक तक बड़ी मात्रा में मोटे अनाज का उत्पादन होता था। ये हमारे दैनिक जीवन का अंग था। मगर बढ़ती आबादी की आवश्यक्ता और इस दिशा में शोध और अनुसंधान की गति थमने के कारण इसका उत्पादन कम होता गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि केमिकल फर्टीलाइजर के अत्यधिक उपयोग से तमाम रोग बढ़े हैं। उन्होंने कहा कि श्री अन्न का उत्पादन कम पानी वाले क्षेत्रों में भी होता है। हमें इसका उत्पादन बढ़ाने के लिए इस दिशा में व्यापक पैमाने पर शोध और अनुसंधान की आवश्यकता है। ये खुशी की बात है कि आज हर परिवार में श्री अन्न का किसी ना किसी रूप में प्रयोग होना शुरू हो गया है। अब इस दिशा में व्यापक रूप से प्रयास प्रारंभ हुआ है।

आज मिलेट्स से नये.नये उत्पाद बनाना शुरू हो गये हैं। ये पौष्टिक होने के साथ ही खाने में भी स्वादिष्ट होते हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि 2017 तक कृषि विज्ञान केंद्रों की हालत खराब थी। आज इनमें नई प्रतिस्पर्धा शुरू हुई है। इसमें कृषि विश्वविद्यालयों की अहम भूमिका है। प्रदेश के तीन करोड़ किसानों के लिए बेहतरीन शोध संस्थानों से अच्छी क्वालिटी के बीज उपलब्ध कराने के लिए तेजी से प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने ऑर्गेनिक प्रोडक्ट के सर्टिफिकेशन के लिए हर कृषि विज्ञान केंद्र और कषि विश्वविद्यालय में लैब की स्थापना करने के लिए भी कहा। सीएम योगी ने बताया कि सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रही है और इसमें गोवंश बहुत बड़ी भूमिका निभा सकता है।

35 कृषक उत्पादक संगठनों को सम्मानित किया

मुख्यमंत्री ने समारोह के दौरान श्री अन्न के क्षेत्र में कार्य करने वाले 35 कृषक उत्पादक संगठनों को सम्मानित किया। इसके अलावा प्रदेश के पांच कृषि विज्ञान केंद्रों (झांसी, ललितपुर, बांदा, हमीरपुर और गाजीपुर) को मिलेट्स प्रसंस्करण संयंत्र के लिए 95.95 लाख की सहायता प्रदान की गई। साथ ही जिन कृषक उत्पादक संगठनों ने अधिक से अधिक किसानों को मिलेट्स फर्मिंग के लिए प्रशिक्षित और प्रोत्साहित किया उन्हें भी मुख्यमंत्री ने समारोह के दौरान सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, एमएसएमई मंत्री राकेश सचान, कृषि राज्यमंत्री बलदेव सिंह औलख, यूपी कृषि अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष कैप्टन विकास गुप्ता, कृषि उत्पादन आयुक्त मनोज कुमार सिंह, संजय अग्रवाल, डॉ देवेश चतुर्वेदी सहित कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आए कृषक उत्पादन संगठनों और कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारीगण के अलावा बड़ी संख्या में प्रगतिशील किसान मौजूद रहे।

झारखंड के कोंडरमा में लगेगा आलू चिप्स का प्लांट, 500 किसानों को होगा सीधा लाभ

हलधर किसान (झारखंड)।
88174 02860

झारखंड राज्य कोडरमा जिले के डोमचांच में आलू की बेहतर पैदावार होती है। इसे देखते हुए बाजार समिति में आलू चिप्स प्लांट लगाए जाने की तैयारी हो रही है।

उपायुक्त मेघा भारद्वाज ने बताया आलू चिप्स प्रोसेसिंग यूनिट को लेकर सभी तरह की तैयारियां पूरी कर ली गई है और जल्द ही झुमरी तिलैया स्थित बाजार समिति परिसर में खाली पड़े भूभाग पर मशीने लगाई जाएगी। आलू चिप्स के लिए फुलवरिया में सोना प्रजाति के आलू की खेती के लिए किसानों को प्रेरित और प्रशिक्षित किया जा चुका है। इस आलू चिप्स प्लांट से 500 किसान सीधे तौर पर जुड़ेंगे, जिससे न सिर्फ उनके आर्थिक उपार्जन में बदलाव आएगा, बल्कि कोडरमा के बने आलू चिप्स अब बाजारों में विभिन्न ब्रांडों को टक्कर भी देते नजर आएंगे।

आलू चिप्स प्लांट का संचालन एजेंसी के माध्यम से किया जाएगा और इसमें किसानों के साथ.साथ आजीविका महिला मंडल की सदस्यों को भी शामिल किया जाएगा। उपायुक्त मेघा भारद्वाज ने कहा कि आलू प्लांट लगाने को लेकर तैयारी पूरी कर ली गई है और जल्द ही जल्द प्रोसेसिंग यूनिट बाजार समिति परिसर में स्थापित किया जाएगे, ताकि किसानो और आजीविका महिलाओं को रोजगार के साथ.साथ बेहतर आर्थिक उपार्जन पर लाभ मिल सके।

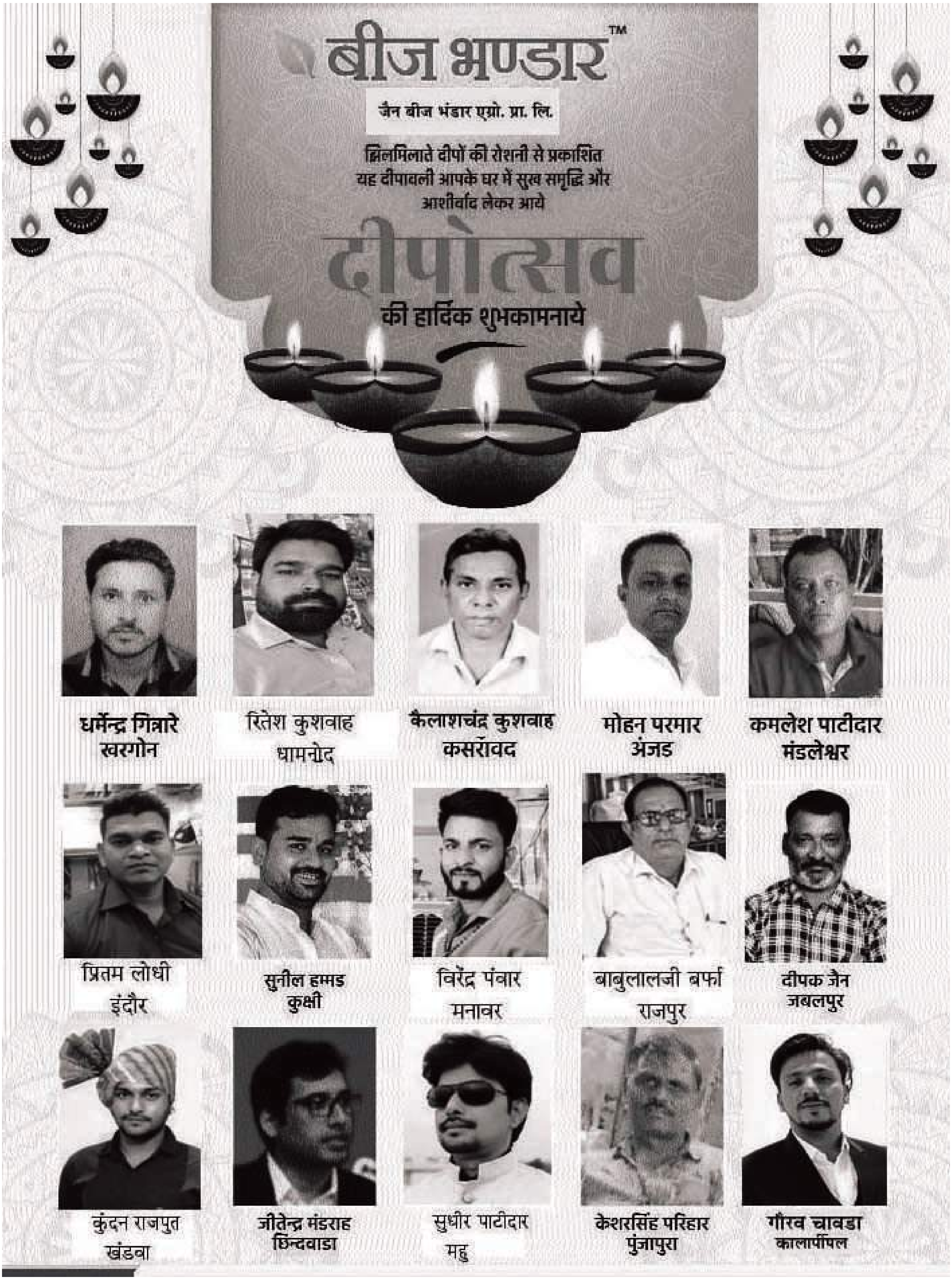
बीज भण्डार™
जैन बीज भंडार एग्रो. प्रा. लि.
झिलमिलाते दीपों की रोशनी से प्रकाशित
यह दीपावली आपके घर में सुख समृद्धि और
आशीर्वाद लेकर आये
दीपोत्सव
की हार्दिक शुभकामनाये
धर्मेन्द्र गिन्नारे
खरगोन
रितेश कुशवाह
धामनोद
कैलाशचंद्र कुशवाह
कसरावद
मोहन परमार
अंजड
कमलेश पाटीदार
मंडलेश्वर
प्रितम लोधी
इंदौर
सुनील हम्मड
कुक्षी
विरेंद्र पंवार
मनावर
बाबुलालजी बर्फा
राजपुर
दीपक जैन
जबलपुर
कुंदन राजपुत
खंडवा
जीतेन्द्र मंडराह
छिन्दवाडा
सुधीर पाटीदार
महु
केशरसिंह परिहार
पुंजापुरा
गौरव चावडा
कालापीपल

अनाज और पानी के संकट का मुकाबला करने के लिए सुपर फूड साबित हो रहे हैं मोटे अनाज

हलधर किसान
8817402860

मोटे अनाज को प्रचलन में लाने के लिए सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। लोगों को इसके प्रति जागरूक किया रहा है। मोटा अनाज भारत में प्राचीन काल से चलता आ रहा है। लेकिन समय के साथ लोग मोटे आनाज को भूलते गए और हमारी थाली से गायब हो गया। जबकि मोटे अनाज का वर्णन हमारे प्रचीन साहित्यों में भी मिलता है। साल 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष के तौर पर मनाया जा रहा है। मोटे अनाज के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाई जा रही है, ताकि इसे अपनी डाइट में जोड़कर सेहत को बेह्तर बनाया जा सके। गेहूं.चावल के मुकाबले मोटा अनाज उगाना और खाना दोनों ही ज्यादा सुविधाजनक है। मिलेट में पोषण भी अधिक होता है, जिससे शरीर की इम्यूनिटी मजबूत होती है और बीमारियों से लड़ने की शक्ति भी मिलती है। कंद्र सरकार ने अपने बजट में मिलेट को बढ़ावा देने के लिए श्री अन्न योजना चलाई है।

अंतर्राष्ट्रीय अर्ध.शुष्क उष्णकटिबंधीय फसल अनुसंधान संस्थान के मुताबिक् अफ्रीका और एशिया में 9 करोड़ से ज़्यादा लोग अपने आहार में मोटे अनाज पर निर्भर करते हैं। वैसे तो दुनिया भर में मोटे अनाज की खपत में 9 प्रतिशत की दर से गिरावट आई है लेकिन 2022.27 के लिए मोटे अनाज के बाज़ार को लेकर पूर्वानुमान में आशाजनक रुझान दिख रहे हैं। मोटे अनाज के उत्पादन के मामले में 41 प्रतिशत के हिस्से के साथ भारत का वर्चस्व है जबकि खपत साल दर साल गिर रही है। दूसरी तरफ 40 प्रतिशत खपत के साथ अफ्रीका सबसे बड़ा बाज़ार बन गया है।

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) ने 2023 को मोटे अनाज (ज्वार, बाजरा, रागी इत्यादि का वर्ष) घोषित किया है और सभी भागीदारों से कहा है कि पोषण और स्वास्थ्य के मामले में मोटे अनाज की खपत से होने वाले फायदों के साथ.साथ खराब और बदलती जलवायु संबंधी परिस्थितियों के तहत उनकी खेती की अनुकूलता के बारे में नीतिगत ध्यान आकर्षण के लिए समर्थन प्रदान करें। मोटे अनाज से सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी). मुख्य तौर पर एसडीजी 2(भूख से मुक्ति), एसडीजी 3 (अच्छी सेहत और खुशी), एसडीजी 12 (सतत खपत और उत्पादन) और एसडीजी 13 (जलवायु पर कदम). को हासिल करने में मदद की संभावना मिलती है। मोटे अनाज को पैदा करने के कई फायदे हैं। ये न्यूनतम उर्वरक के इस्तेमाल के साथ पानी के लिए बारिश पर निर्भर फसल है, कीड़ों के हमले की कम आशंका की वजह से इनमें कीटनाशकों का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। मोटे अनाज के बीज का भंडारण कई वर्षों के लिए किया जा सकता है जिससे सूखे की आशंका वाले क्षेत्रों के लिए ये लाभदायक है। मोटे अनाज को अंग्रेजी में मिलेट कहते है। मोटे अनाज मानव और जानवरों के लिए एक पौष्टिक आहार है। मिलेट को आप कहीं पर भी उगा सकते है। इसे सूखे क्षेत्र, वर्षा क्षेत्रों, तटीय क्षेत्रों या पहाड़ी क्षेत्रों में आसानी से उगाया जा सकता है। दुनिया भर के लोगों को जलवायु के अनुकूल मोटे अनाज के उत्पादन और खपत के सामान्य फायदों पर ध्यान देना चाहिया क्योंकि इस फसल का उत्पादन बिना किसी परेशानी के होता है और इसके खाने से लोगों को सेहत के मामले में बहुत लाभ होता हैं।

मोटे अनाज बहुउद्देशीय होते हैंः

चावल के मुकाबले मोटे अनाज 70 प्रतिशत कम पानी की खपत करते हैं, गेहूं के मुकाबले आधे समय में तैयार होते हैं और मोटे अनाज को इस्तेमाल के लिए तैयार करने में 40 प्रतिशत कम ऊर्जा की ज़रूरत होती है। सतत खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए ज़्यादा पोषण के गुण वाले मोटे अनाज से जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी और सूखे की स्थिति जैसी समस्याओं का समाधान होता है। मोटे अनाज में एंटीऑक्सिडेंट पर्याप्त मात्रा में होता है और ये संभावित स्वास्थ्य फायदों के साथ प्रोबायोटिक्स की क्षमता को बढ़ाने में मदद करते हैं। ये शरीर की रोग प्रतिरोधक प्रणाली में एक भूमिका अदा करते हैं और बचपन के कुपोषण एवं आयरन की कमी से एनीमिया को रोकने का समाधान हैं। सबूत संकेत देते हैं कि दूसरे अनाज के मुक़ाबले मोटे अनाज में पोषण के गुण ज़्यादा मात्रा में मौजूद हैं।

मिलेट शरीर की अम्लता दूर करते है

- मिलेट नियासिन (विटामिन बी.3) का अच्छा स्त्रोत है।
- मिलेट टाइप.1 और टाइप.2 डायविटीज दूर करते है।
- मिलेट फैट (मोटापा) कम करने में सहायता देता है।
- मिलेट कैंसर रोग से मुक्ति में मदद करते है।
- मिलेट अस्थमा रोग दूर करते हैं।
- मिलेट मेटाबोल्कि सिड्रोम दूर करने में सहायक हैं।
- मिलेट पाचन तंत्र में सुधार करने में मदद करते है।
- बालों संबंधित समस्याओ को दूर करते हैं।
- मिलेट किडनी, लीवर और इम्यून सिस्टम को स्वस्थ रखने में मदद करते है।
- मिलेट शरीर को डिटॉक्सीफाई करते हैं।

मिलेट खाने के फायदे

आमतौर पर हम सभी के घरों में गेहूं के आटे की रोटियां बनाई जाती हैं। लेकिन कई ऐसे लोग हैं जो बाजरे की रोटी खाना पसंद करते हैं। बाजरे में बहुत सारे स्वास्थ लाभ होते हैं, इसलिए डॉक्टर भी हेल्दी डायट में बाजरे का उपयोग करने की सलाह देते हैं। गेहूं, चावल और बाकी अनाज की तरह ही खेतो में बाजरे को भी उगाया जाता है। कई किसान बाजरा की खेती करते हैं, ऐसे में यह आसानी से उपलब्ध हो जाता है। बाजरे की खेती राजस्थान, बिहार, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब आदि कई राज्यों में होते हैं।

मोटे अनाज में पोषक तत्वों की भरपूर मात्रा होती है। इसका सेवन मानव सेहत के लिए लाभकारी होता है। पोषण की दृष्टि से इसके दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन (10.5 से 15.5 प्रतिशत) और वसा (4 से 8 प्रतिशत) मिलती है। वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटिन राइवोफ्लेयिन (विटामिन बी.2) और नायसिन (विटामिन बी.6) प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। बाजरे में प्रोटीनए कैल्शियमए फॉस्फोरस और खनिज लवण उपयुक्त मात्रा में एवं हाइड्रोसायनिक अम्ल सुरक्षित मात्रा में पाया जाता है।

जलवायु परिवर्तन से लड़ने में कारगर

जब बात फसल को लेकर किसानों की पसंद की आती है तो आर्थिक कारण महतवपूर्ण है और ये संभवतः चावल और गेहूं की खेती की तरफ ऐतिहासिक बदलाव में भूमिका अदा करते है। लेकिन सरकार के द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य ;तय करने और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम के तहत सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) की वजह से गेहूं और धान के उत्पादन के पक्ष में बात चल जाती है। इन दोनों कारणों की वजह से किसानों को दूसरी फसल जैसे कि दालों के उत्पादन के लिए प्रोत्साहन नहीं मिलता है।

गेहूं और धान पानी पर निर्भर फसल हैं। जिसकी वजह से भू.जल स्तर पर और ज्यादा बोझ पड़ता है। भारत और दूसरे देशों में ज्यादातर लोग चावल की खपत को इसलिए प्राथमिकता देते हैं क्योंकि इसे बनाने में आसानी होती है और ये उनकी आदत में भी शुमार है। लेकिन इस बात पर ध्यान देना होगा कि मोटे अनाज को ज्यादा समय तक उपयोग के लिए नहीं रखा जा सकता है और ये नमी, तापमान और छोटे बाजार पर निर्भर करते है। इसे देखते हुए मोटे अनाज के पोषण गुणां को लेकर और भी ज्यादा जागरूकता अभियान चलाने और लंबे समय तक इसके इस्तेमाल के लिए बेहतर भंडारण सुविधा का निर्मान करने की जरूरत है।

कर्नाटक और ओडिशा जैसे राज्यों ने मोटे अनाज को बढ़ावा देकर और कुपोषण का मुकाबला करने के लिए स्कूलों में दी जाने वाली मिड.डे मील में शामिल करने के साथ.साथ सार्वजनिक वितरण प्रणाली और आंगनबाड़ी में वितरण के द्वारा एक मिसाल पेश की है।

क्या है मोटा अनाज

ज्वार- इसकी गहरी जड़ प्रणाली, मोम पत्तियों, तने में मोर्टार कोशिकाओं की उपस्थिति के कारण सूखे की स्थिति को सहन कर सकता है। यह शुष्क भूमि की स्थिति में किसी भी अन्य अनाज की फसलों की तुलना में अधिक उपयुक्त है क्योंकि यह अपने विकास के किसी भी स्तर पर उच्च तापमान का सामना कर सकता है।

बाजरा- खराब रेतीली मिट्टी पर उग सकता है और ज्वार या मक्का की तुलना में नमी का कुशलता से उपयोग करने की क्षमता के कारण शुष्क जलवायु के लिए उपयुक्त है। हालाकिए ज्वार के जैसा यह सूखे या पानी के तनाव की स्थिति का विरोध नहीं कर सकता है, लेकिन ऐसी स्थिति में यह अपने जीवन चक्र का छोटा कर सकता है। और जल्दी फूलना शुरू कर सकता है। इसे सूखा पलायन तंत्र के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार बाजरा आमतौर पर 200.500 मिमि की सीमा में कम वार्षिक वर्षा वाले सीमांत मिट्टी वाले क्षेत्रों में उगाया जाता है।

रागी- रागी को पहले मामूली अनाज माना जाता था, लेकिन वर्तमान में इसकी व्यापक अनुकूलन क्षमता इसे अन्य अनाजों के बीच अधिक लोकप्रिय बनाती है। इसमें अनाज के बीच लवणता को सहन करने की सबसे अच्छी क्षमता है।

फ ॉ क्स ट ॅ ल बाजरा- इसमें तेजी से पकने की क्रियाविधि और उच्च प्रकाश संश्लेषण दक्षता होती है, इसलिए यह पकड़ने वाली फसल के रूप में उपयोग करने के लिए पूरी तरह उपयुक्त है। यह केवल एक बुआई पूर्व वर्षा के साथ अच्छी उपज प्रदान कर सकता है।

प्रोसो मिलेट- अपेक्षाकृत कम अवधि की आपातकालीन या कम नमी की आवश्यकता वाली जल्दी.सीजन वाली सिंचित फसल है। यह अपेक्षाकृत कम मांग वाली फसल है। प्रोसो बाजरा कई प्रकार की मिट्टी और जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है।

बार्नयार्ड मिलेट- बार्नयार्ड मिलेट एक प्रकार का बाजरा है जिसे एक छोटा अनाज माना जाता है और इसे भारत, चीन, जापान, पाकिस्तान, अफ्रीका और नेपाल में व्यापक रूप से उगाया जाता है। यह एक सूखा.सहिष्णु फसल है जिसे सीमांत भूमि में तेजी से परिपक्वता दर के साथ उगाया जा सकता है और इसमें उच्च पोषण गुण होते हैं।

कोदो मिलेट- कोदो मिलेट को दुनिया का सबसे मोटा अनाज माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि सभी छोटे बाजरा में सबसे अधिक सूखा प्रतिरोध होता है और माना जाता है कि 80.135 दिनों तक चलने वाली बढ़ती अवधि के साथ अच्छी उपज देता है, उथले और गहरी मिट्टी दोनों में अच्छी तरह से बढ़ सकता है।

लिटिल मिलेट – यह जल्दी पक जाता है और सूखे और जल भराव दोनों को झेलता है। अनाज चावल के समान होता है। इसकी उच्च फाइबर सामग्री के लिए इसे एक स्वस्थ प्रतिस्थापन बनाती है। बी.विटामिन, कैल्शियम, आयरन, जिंक और पोटेशियम जैसक खनिजों की अच्छाई से भरपूर है। अब वक्त है मोटे अनाज की संभावना को बढ़ावा देने का और इसके लिए इसके पोषण के गुणों के बारे में जागरूकता बढ़ाई जाए ताकि लोगों की खाने.पीने की पसंद में बदलाव हो सके।

परखें कृषि ज्ञान, आसान सवालों का जवाब देकर पाएं आकर्षण उपहार

हलधर किसान से जुड़े पाठकों के लिएं हम लाए कृषि से जुड़े आसान सवाल, जिनके जवाब देकर आप अपना सामान्य ज्ञान परखने के साथ ही पा सकते है आकर्षक उपहार, तो इस अंक का सवाल है-

प्रश्न 1- निम्नलिखित में से कौन सी एक चलवासी कृषि नही है?

अ - चेना
ब - झुमिंग
स - मिल्पा
द - फजेंडा

आपका उत्तर.....

प्रश्न 2- इनमें से क्या मिश्रित कृषि में सम्मिलित है?

अ- विभिन्न फसलों को योजनाबद्ध तरीके से उगाना
ब- रबी के साथ खरीफ फसलों को उगाना
स- कई तरह की फसलें उगाना तथा पशुपालन भी करना
द- फलों को उगाना तथा सब्जियों को भी

आपका उत्तर........

प्रश्न 3- निम्नलिखित हरी खाद वाली फसलों में से किसमें नाईट्रोजन की मात्रा सर्वाधिक पाई जाती है?

अ- चा
ब- शनई
स- बोडा
डी- ग्वार

आपका उत्तर.....

प्रश्न 4- उत्तर प्रदेश के निम्ननलिखित क्षेत्रों मं से किसमें अन्ना प्रथा उस क्षेत्र के कृषि एवं वानिकी के विकास के लिए अभिशाप है?

अ- पूर्वी उत्तर प्रदेश
ब- उत्तरप्रदेश का बुंदेलखंड क्षेत्र
स- मध्य उत्तरप्रदेश
द- पश्चिमी उत्तर प्रदेश

आपका जवाब...........

अक्टूबर माह के सवालो का सही जवाब, सवाल 1- ए, सवाल 2 -सी, सवाल 3-सी, सवाल 4 का उत्तर- ए है।

नोटः आपके जवाब हमें इस प्रश्नोत्तरी में दर्ज कर अखबार की कटिंग 25 नवंबर तक हमारे वाट्सएप्प नंबर (88174 02860) पर, ई-मेल (haldharkisankgn@gmail.com) या हमारे मुख्य कार्यालयः हमारे प्रधान कार्यालय 598, वेगॉस मॉल, कार्पोरेट बिल्डिंग, एस.14 द्वारका साउथ वेस्ट, नई दिल्ली 110075 या मप्र में 762, बीज भंडार भवन, न्यू नूतन नगर खरगोन में संपर्क कर सकते है। पर डाक के जरिये भेज सकते है। सही जवाब देने वाले पाठको का लॉटरी के जरिये परिणाम निकाला जाएगा। सही जवाब देने वाले विजेता को हलधर किसान की ओर से आकर्षण उपहार उनके भेजे गए पते पर भेजे जाएंगे। अगले अंक में हम सही जवाब और विजेता का नाम घोषित करेंगे।

पारंपरिक खेती के साथ इस तरह की खेती से ले सकते है ज्यादा मुनाफा

हलधर किसान
88174 02860

सहफसली योजना खेती के साथ किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने में कारगर सिद्ध हो रही है। एक ही खेत में एक से अधिक फसलें पुरानी परंपरा है। जैसे गेहूं चना एक साथ उगाना। मुख्य फसल की दो पंक्तियों के बीच में जल्दी पकने और बढ़ने वाली धनी फसलें बोई जा सकती हैं। स्तंभ आकार औषधि पौधे जो बड़े हैं उनके नीचे बेल वाली जैसे करेला और पहुंच आदि की फसलें लगा सकते हैं। छाया की आवश्यकता वाली फसलें अदरक सफेद मूसली अश्वगंधा हल्दी आदि लगाकर अधिकतम भूमि का प्रयोग करके उत्पाद की गुणवत्ता के साथ.साथ शुद्ध लाभ बढ़ाया जा सकता है। किसी कारणवश एक फसल खराब भी हो जाए तो उसके नुकसान की भरपाई दूसरी उपाय से हो सकती है। अतः जहां तक संभव हो सहफसल खेती किसानों को लगाना चाहिए। आजकल किसान गन्ने के साथ सहफसली खेती से अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं।

किसान लगातार पारंपरिक खेती करते आ रहे हैं, जिसमें वह एक समय में एक ही फसल को उगाते रहे हैं। इससे किसानों को एक ही फसल पर हुआ खर्च व लागत ही मिल पाती है। कभी-कभी तो मौसम की विषम परिस्थितियों के कारण उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। इससे किसानों को आर्थिक स्थिति का सामना करना पड़ता है।

इन्हीं समस्याओं को देखते हुए किसानों का सहफसली खेती की ओर रुझान बढ़ा है, जिससे किसान एक खेती के खर्च में दो फसलों का मुनाफा कमा रहे हैं। यदि आप भी सहफसली खेती करने चाहते हैं तो आपको फसलों के चयन में कुछ बातों को ध्यान में रखना जरूरी है। मुख्य फसलों की दो पंक्तियों के बीच में जल्दी पककर तैयार होने वाली फसलें बोई जा सकती हैं।

क्या है सहफसली खेती?

सहफसली खेती एक ऐसी तकनीक है जिसके माध्यम से एक ही खेत में दो फसलें उगाई जाती हैं। इस तकनीकी से खेतों में दिए जाने वाले मुख्य फसल के लिए आवश्यक पोषक तत्वों से ही सहफसली के पौधे अपने लिए आपूर्ति कर लेते हैं।

अनाज फसल की खेती

सहफसली की खेती में तिलहन और सब्जी फसल को उगा सकते हैं। सहफसली को उगाने के लिए एक अनुपात में उगाना चाहिए। जैसे गेहूं की फसल के साथ सरसों। इसके लिए 9 गेहूं की लाइन के बाद एक सरसों की लाइन होनी चाहिए। वहीं मक्का के साथ पत्ता गोभी के लिए 1: 1 के अनुपात में लगा सकते हैं।

व्यापारिक फसल की खेती

सहफसली खेती के लिए गन्ना, सब्जियां और कई तरह की औषधीय फसलें शामिल हैं, जिन्हें सहफसली के रूप में उगाकर कमाई कर सकते हैं। जैसे गन्ने के साथ मटर और आलू जैसी सब्जी फसल उगा सकते हैं।

दलहनी फसल की खेती

सहफसली की खेती में दलहनी फसल बेहद फायदेमंद होती है। क्योंकि दलहनी फसलों को सहफसली के रूप में उगाने से पौधों को उर्वरक के रूप में नाइट्रोजन मिलती रहती है। इस वजह से दलहनी फसलों को लगभग सभी फसलों के साथ उगाना फायदेमंद होता है।

सब्जी फसल की खेती

सहफसली खेती करने के लिए लता वाली सब्जी फसल को क्यारी बनाकर उगाते हैं तो बैंगन और टमाटर जैसी फसल को उगा सकते हैं। गेहूं और सरसों की फसल के साथ आलू की फसल को उगा सकते हैं। सरसों की खेती में 3रू1 के अनुपात में आलू को उगा सकते हैं।

मसाला फसल की खेती

मसाला फसलों की भी सहफसली खेती की जा सकती है। जैसे आलू के साथ लहसुन को उगाया जा सकता है। इसके अलावा प्याज के साथ लहसुन और गन्ने के साथ धनिया को उगाया जा सकता है।

खाद्य.पदार्थों की हानि और बर्बादी को कम करना हमारी जिम्मेदारीः राज्यमंत्री शोभा करंदलाजे

हलधर किसान (नई दिल्ली)।
88174 02860

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री सुश्री शोभा करंदलाजे ने नई दिल्ली के साउथ एशियन रीजन में फूड लॉस एंड वेस्ट प्रीवेंशन विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन किया। इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और जर्मनी के थुनेन संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप.महानिदेशक एनआरएम, डॉ. एसके चौधरी, जर्मनी के थुनेन इंस्टीट्यूट के अनुसंधान निदेशक डॉ. स्टीफन लैंग, भाकृअनुप के उप महानिदेशक डॉ. एस एन झा और भारत, बांग्लादेश, भूटान, फ्रांस, जर्मनी, इंडोनेशिया, नेपाल और श्रीलंका के लगभग 120 प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

सुश्री शोभा करंदलाजे ने किसानों और उपभोक्ताओं से संबंधित एक महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक मुद्दे को हल करने के लिए आईसीएआर और जर्मनी के थुनेन इंस्टीट्यूट द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में लगभग 3 बिलियन टन खाद्य पदार्थों की बर्बादी होती है। विकसित और विकासशील देशों की उपयुक्त प्रौद्योगिकियों और कार्यप्रणालियों को आगे लाया जाना चाहिए ताकि दुनिया भर में हो रही खाद्य पदार्थों की हानि और बर्बादी को कम किया जा सके। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि सामाजिक संगठनों को विभिन्न हितधारकों के बीच जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की जरूरत है और खाद्य.पदार्थों की बर्बादी को कम करने के तौर.तरीकों को अपनाना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि खाद्य पदार्थों की बर्बादी न केवल उपभोक्ताओं के लिए सीधा नुकसान है, बल्कि इसका पर्यावरण एवं पूरक अर्थव्यवस्थाओं पर भी असर पड़ता है। तीन दिवसीय कार्यशाला हमें कुछ सार्थक नीति बनाने और एक साथ कार्य करने में मदद करेगी।

भारत में हर साल लगभग 74 मिलियन टन खाद्य.पदार्थों की हानि

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के एडीजी डॉ. के नरसैया ने खाद्य.पदार्थों की हानि के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर एक परिचयात्मक प्रस्तुति दी। सभी प्रतिनिधियों ने इस सत्र के दौरान परिवारों, कार्यालयों, उद्योगों, समाज और समुदायों में खाद्य.पदार्थों की हानि और बर्बादी को रोकने की शपथ ली। यह समझते हुए कि प्रचुर मात्रा में कृषि उत्पादन के बावजूद, उत्पादन से लेकर खपत तक खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में पर्याप्त मात्रा में खाद्य.पदार्थों की हानि हो जाती है या बर्बादी हो जाती है। भारत में हर साल लगभग 74 मिलियन टन खाद्य.पदार्थों की हानि हो जाती है। अगर इस हानि को रोका जाये, तो इससे काफी लोग लाभान्वित होंगे।

भारत सरकार पड़ोसी देशों को प्रेरित करने में निभा सकती है महत्वपुर्ण भूमिका

स्टीफन लैंग ने उल्लेख किया कि खाद्य पदार्थों की हानि और बर्बादी को कम करने एवं रोकने से ही जरूरतमंदों तक खाद्य पदार्थों का पहुंचना सुनिश्चित होगा। खाद्य.पदार्थों की हानि और बर्बादी पर एक सहयोगात्मक पहल खाद्य.पदार्थों की हानि और बर्बादी की समस्या से निपटने में अनुसंधान परिणामों और व्यावहारिक अनुभव के वैश्विक आदान.प्रदान को बढ़ावा देने के लिए काम कर रही है। भारत सरकार खाद्य.पदार्थों की हानि और बर्बादी को रोकने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर और सहयोगी प्रयासों को शुरू करने में सभी पड़ोसी देशों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

महामारी, जलवायु परिवर्तन और युद्धों का भी असर

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम फ्रांस की सुश्री क्लेमेंटाइन ओश्कॉनर ने खाद्य पदार्थों की हानि और बर्बादी के मैट्रिक्स तथा कृषि एवं पर्यावरण की स्थिरता पर इसके प्रभाव के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि महामारी, जलवायु परिवर्तन और युद्धों का भी खाद्य.पदार्थों की हानि और बर्बादी पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

उन्होंने दुनिया भर में सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों को सीखने और साझा करने तथा उपभोक्ताओं के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए नीति बनाने पर जोर दिया। उन्होंने याद दिलाया कि 2030 तक खाद्य पदार्थों की हानि को कम करके आधा करने के लक्ष्य 12.3 के सतत विकास को हासिल करने के लिए केवल कुछ ही साल बचे हैं।

पंजाब के बठिंडा में 1.400 करोड़ रुपये की लागत से होगी जैव.रिफाइनरी संयंत्र की स्थापना

धान के भूसे का होगा उपयोग, थमेगी पराली जलाने की घटनाएं, हुई प्रगति की समीक्षा

हलधर किसान। हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) जोकि एक केन्द्र सरकार का सार्वजनिक उपक्रम है, 1.400 करोड़ से अधिक की लागत से पंजाब के बठिंडा में दूसरी पीढ़ी (2जी) के जैव.रिफाइनरी संयंत्र की स्थापना करने जा रही है। इस 2जी बायो.रिफाइनरी को केन्द्र सरकार के इथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम के तहत पेट्रोल के साथ मिश्रित करने के लिए इथेनॉल के उत्पादन के हेतु धान के भूसे के उपयोग के लिए डिजाइन किया गया है। इस संयंत्र के स्थापना कार्य में होने वाली प्रगति की निगरानी एनसीआर और आसपास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) द्वारा भी की जा रही है। आयोग ने बठिंडा स्थित संयंत्र परिसर का दौरा भी किया था और एचपीसीएल के सीएमडी एवं बठिंडा के जिला प्रशासन के साथ स्थापना कार्य में हुई प्रगति की समीक्षा भी की थी।

इस 2जी इथेनॉल संयंत्र की डिजाइन की गई उत्पादन क्षमता 100 किलो लीटर इथेनॉल प्रतिदिन है और इसके अपनी पूरी क्षमता के साथ काम करने की स्थिति में इस उद्देश्य के लिए प्रतिदिन 570 एमटी (2.00.000 एमटी सालाना) धान के भूसे का उपयोग किया जाएगा। आगामी 2जी इथेनॉल संयंत्र, जिसके इस साल के अंत तक चालू होने की उम्मीद हैए के लिए फीडस्टॉक के रूप में उपयोग के लिए इस सीजन में लगभग एक लाख एमटी बायोमास खरीदा जाएगा। इस संयंत्र ने पहले ही बायोमास की खरीद शुरू कर दी है और अगले कुछ दिनों में खरीद में तेजी आने की उम्मीद है। एचपीसीएल खरीद से संबंधित समस्याओं को सुव्यवस्थित व हल करने के लिए पंजाब राज्य सरकारए जिला प्रशासन और पंजाब ऊर्जा विकास एजेंसी के साथ समन्वय कर रहा है। धान की पराली खरीद के लिए बठिंडा और आसपास के क्षेत्रों के स्वयं सहायता समूहों के साथ समझौते किए गए हैं। कुल 23.000 एमटी से अधिक धान का भूसा पहले ही एकत्रित किया जा चुका है। यह संयंत्र पंजाब में, विशेषकर बठिंडा जिले में, इस वर्ष और साथ ही आने वाले वर्षों में धान की पराली जलाने की घटनाओं में काफी कमी लाएगा। इसका असर पहले से ही दिख रहा है। इस वर्ष 15 सितंबर से लेकर 01 नवंबर तक की अवधि में, बठिंडा में धान की पराली जलाने के कुल मामले 2022 में 880 से घटकर 294 हो गए हैं।

स्वामी विवेक जैन, प्रकाशक विवेक जैन, मुद्रक कैलाश महाजन द्वारा गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, तिलक पथ, खरगोन से मुद्रित एवं 26/1, विवेकानंद कॉलोनी, वार्ड नंबर 5, खरगोन से प्रकाशित, संपादक विवेक जैन।.RNI No. MPHIN/2022/85285, मोबा. नं.98262 25025, 94254 89337 (समस्त प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र खरगोन रहेगा)।